A Multidisciplinary Indexed International Research Journal
ISSN : 2320-3714
Volume : IV
Airo
ADHYAYAN
INTERNATIONAL
RESEARCH
ORGANISATION

Airo International Research Journal
Volume IV, ISSN: 2320-3714
Impact Factor 0.75 to 3.19
July, 2014

पंत जी के काव्य में प्रकृति चित्रण

डॉ0 टी. गोविन्द म्मा

प्राध्यापिका हिंन्दी विभाग

सरकारी महाविद्यालय नरसन्नापेटा श्रीकाकुलम्

Declaration of Author: *I hereby declare that the content of this research paper has been truly made by me including the title of the research paper/research article, and no serial sequence of any sentence has been copied through internet or any other source except references or some unavoidable essential or technical terms. In case of finding any patent or copy right content of any source or other author in my paper/article, I shall always be responsible for further clarification or any legal issues. For sole right content of different author or different source, which was unintentionally or intentionally used in this research paper shall immediately be removed from this journal and I shall be accountable for any further legal issues, and there will be no responsibility of Journal in any matter. If anyone has some issue related to the content of this research paper's copied or plagiarism content he/she may contact on my above mentioned email ID.*

हिंदी साहित्य जगत में छायावाद प्रगतिवाद और अध्यात्म वाद के वारिश एवं प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत जी का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान हैं । उनका जन्म उत्तराखंड कुमायु की पहाड़ियों पर बसे अल्मोड़ा जिले के कौसानी के बागेश्वर नामक गांव में 20 मई 1920 को हुआ इनके जन्म के कुल घंटों बाद ही इनकी मां चल बसी इनका पालन पोषण इनकी दादी ने किया पंत जी का असली नाम गोसाई दत्त था और यह नाम पसंद ना होने के कारण इन्होंने अपना नाम सुमित्रानंदन पंत रख लिया ।

सुमित्रानंदन पंत जी का बचपन कुमायूं पर्वतों की सुंदर वादियों मैं बीता इसी कारण प्रकृति से उनका बहुत ही घनिष्ठ संबंध रहा है पंत जी का महाकाव्य लोकायतन में उन्होंने अपने काव्य में प्रेरणा की शक्ति एवं स्रोत प्रकृति को ही मानते हुए करते हैं की कविता करने की प्रेरणा मुझे सबसे पहले प्रकृति निरीक्षण से मिली है जिसका श्रेय मेरी जन्म भूमि कुर्मांचल प्रदेश को है कवि जीवन से पहले भी मुझे याद है मैं घंटों एकांत में बैठा प्रकृति दृश्य को एकटक देखा करता था और कोई अज्ञात आकर्षण मेरे भीतर एक अव्यक्त सौंदर्य का जाल बुनकर मेरी चेतना को तन्मय कर देता था ।

प्रकृति की रमणीय हरियो से भरा हुआ कौसानी गांव भारत का स्विजरलैंड कहलाता है जगमग करती जुगनूओं की रोशनी रंग-बिरंगे फूलों का बहार एकांत घाटी का आवाक सौंदर्य आनंद विभोर करने वाला मनोरम हृदय का चित्रण पंत जी की रचनाओं में हम पाते हैं ।

उन फैली हरियाली में
कौन अकेली खेल रही मां
वह आपकी वय वाली में ।

शिल्पा और सौंदर्य पंत पृष्ठ संख्या 36

सुमित्रानंदन पंत जी की भावनाएं अति सुखवती सूरज का डूबना नीले नीले अंबर पर हृदय को छू जाने को लालिमा घर जाती है। गोधूलि बेला बहती पंछियों का कल कल मंद-मंद बहती हुई हवा के झोंकों के हां में हां मिलाती खुशी से हिलने वाली रंग बिखेरने फूलों की डालियां झर झर झर ने कल -कल बहती नदिया सुंदर नदिया पंत जी के एकांकी किशोर मन को सदैव अपनी ओर आकर्षित करती बुलाती है प्रकृति के सौंदर्य में डूबा उनकी मनो भावनाओं का सुंदर समाहार समय-समय पर उनकी कविताओं में प्रतिष्ठा होता रहा है अपने गांव कौसानी की मनोरम झांकी का वर्णन पंत जी ने इस प्रकार किया

रहा ग्राम वह मरकत ग्रामीण गण
श्रद्धानत आरोहण के प्रति
मुग्धा प्रकृति का आत्मा-समर्पण
सांझ- प्रातः स्वाराणिम शिखरों से
द्रभायें बरसाती वैभव
ध्यानमग्न नि: स्वर निसर्गनि ज़
दिव्य रूप का करता अनुभव।

प्रकृति के रमणीय रूप से प्रेरणा पाकर पंत जी अपनी काव्य कल्पना के महत्व को बताते हुए कहते हैं कि मैं कल्पना के सत्य को सबसे बड़ा सत्य मानता हूं मेरी कल्पना को जिन जिन विचारधाराओं से प्रेरणा मिली है उन सबका समीकरण करने की मैंने चेष्टा की है । मेरा विचार है कि वीणा से लेकर ग्राम में तक अपनी सभी रचनाओं में मैंने अपनी कल्पना को ही वाणी दी है इनकी वीणा की कविताओं में गीतांजलि का प्रभाव है जिसमें खिलखिलाती फूलों एवं प्रकृति का सुंदर नजारा है इस माहौल का आनंद लेते हुए पंडित जी कहते हैं कि मैंने प्रकृति की हर बड़ी छोटी वस्तुओं को अपनी कल्पना की तूलिका से रंग कर काव्य की अद्भुत सामग्री इकट्ठा की है उनकी कविता वीणा की सुंदर झांकी का वर्णन कवि सुमित्रानंदन पंत जी ने इस प्रकार किया।

"पावस ऋतु थी पर्वत प्रदेश
पल पल परिवर्ती प्रकाशित प्रदेश

मखलाकार पर्वत आप और

अपने सहंऋ दृग समान फाड"

उनकी कविता 'ग्रंथि' कवि का प्रेम प्रधान खंड काव्य है गुंजन कविता में मानव जीवन का संबंधी कई प्रकार के मनोरम चित्रण है।

"मैं नहीं चाहता चिर सुख

मैं नहीं चाहता चिर दुख सुख-दुख की आंख मिचोली खेल जीवन अपना मुख यह सांझ उषा का आंगन आलिंगन विरह मिलन का चिर हास- अश्रुमय आनंद रे इस मानव जीवन का "

पंत जी प्रकृति के मनोरम दृश्य को आलम्वन के रूप में स्वीकार कर मानव जीवन के तथ्यों का चित्रण किया है पंत जी की ग्राम्या उसकी भाषा गांव के वातावरण की उपज है।

"गंजी को मार गया पाला अरहर के फूलों का झूलासा हांका करती दिन भर बंदर अब मालिनी की लड़की तुलसा ।"

ग्रामीण जीवन के रोचक व सरस शब्द चित्र खींचने में पंत जी माहिर हैं प्रकृति को सचेतन रूप में देखने वालों में पंत जी प्रमुख हैं इनमें संप्रदायिक कोमल भावनाओं का ही प्रकार हुआ है इन पर अंग्रेजी कवियों वर्ड्सवर्थ शैली कीटस वायर आदि का विशेष प्रभाव पड़ा है पंडित जी का काव्य एवं प्रकृति प्रेम से भरा हुआ है प्रकृति को संजीव रूप में स्वीकार कर उसका मानवीकरण नारी रूप में किया है पंत जी के काव्य में विशेष कलात्मकता होती है प्रकृति को विराट संजीव सौंदर्य सत्ता के रूप में स्वीकार किया गया है इन समूह प्रकृति चित परिचित नारी सहस्य खड़ी होकर अपनी आप भी सुनाती हुई लगती है पंत जी भावुक होकर श्रद्धा मन प्रकृति कहते हैं कि कहो कौन हो दमयंती सी तुम तारों के नीचे सोई हाय तुम्हें भी त्याग का अली नल सा निठुर कोई ?

पंत जी अपने हृदय की अनुभूतियों में समस्त रागात्मक संबंध स्थापित करके प्रकृति के प्रत्येक अंश में अपने आप को तथा स्वयं में प्रकृति की आभा को देखकर पुलकित हो जाते हैं पंत जी के प्रकृति वर्णन इतना अनूठा एवं वर्णन रंजीत है कि हर एक के मन में प्रकृति के प्रति जिज्ञासा एवं अटूट श्रद्धा की भावनाओं को जगाता है पंत जी कहते हैं कि वह जब भी अंगड़ाई लेते हुए आलस्य आंखें मूंद लेते हैं तो प्रकृति उनकी कल्पना में बहारों की रमणीय झूलों में बादलों को चीर कर झूला करती हैं

बादलों में छाया मेल घूमते हैं आंखों में शेर अवनि और अंबर के ब्रेक खेल शैल में जलद जलद में शौल।

सच्चे अर्थों में श्री सुमित्रानंदन पंत जी ने प्रकृति के कण कण में अपूर्ण शोभा गरिमा व सुषमा देखी है इन्होंने अपनी अद्भुत कल्पना के द्वारा ऐसे मनोहर

शब्द चित्र खींचे हैं जिनके अवलोकन से हृदय में गुदगुदी सी होने लगती है इसका शब्द चयन मनोहर है शब्दों में प्राण इश्क था करने के कारण इनके शब्द समाहार हमारे आंखों के सामने ऐसे लगते हैं जैसे अभी अभी खेल रहे फूल हमें देख कर मुस्कुरा रहे हैं भीनी भीनी खुशबू हवा के झोंकों के साथ हमारे मन को छू कर चली जाती है गोरे गुनगुना रहे हैं लहरें झूम रहे हैं जैसे बच्चे तुतलात हुए बोल रहे हैं इन्हीं सब कारणों से पंडित जी को हिंदी साहित्य का वर्ड्सवर्थ कहा जाता है पंत जी अपने जीवन में प्रकृति को ही प्राथमिकता देते हैं प्रकृति उनके लिए स्वर्ग है इसी संदर्भ में डॉक्टर प्रभाकर माचवे जी के शब्द सटीक लगते हैं उनका प्रथम विषय है प्रकृति कौन विषय है मानव पंत जी प्रकृति के खुले आंगन में विचरण करते नजर आते हैं

“छोड़ द्रुमों की मृदु छाया तोड़ प्रकृति से भी माया वाले तेरे बाल जाल में कैसे उलझा दूं लोचन ”

पंत जी की प्रतिभा बेमिसाल है अतुलनीय है इनकी प्रतिभा के संबंध में श्रीमती चंद्रकांता प्रभाकर जी की प्रतिभा बेमिसाल है अतुलनीय है इनकी प्रतिभा के संबंध में श्रीमती चंद्रकांता प्रभाकर जी ने लिखा है कि पंत जी हिंदी के सुंदरतम कलाकार है कला के क्षेत्र में जहां उन्होंने पुरातन काव्य कृति का रंगमहल खड़ा किया है वही भावना क्षेत्र में प्रकृति और मानव जीवन के अतुल भाव सौंदर्य हिंदी संस्कार को संपन्न किया है उनकी रचनाएं शांत और उद्धार विचारों की गंभीरता और पवित्रता से मंडित हैं इनकी कविताओं पर रविंद्र रविंद्र नाथ जी का प्रभाव है प्रकृति सौंदर्यता से भरी हुई उनकी कविताएं हमें आलौकिक संसार की सैर कराती हैं मन की थकान को पल भर में दूर कर एक अद्भुत आनंद की अनुभूति से अभिभूत कर देती है